वर्ष-1, अंक-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2023

भित्तिचित्रों की तकनीक का अध्ययन

भक्ति अग्रवाल
ललितकला विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सारांश -

प्राचीन काल में भित्ति चित्रों का विशेष महत्व होता था। मंदिर व महलों को आकर्षक बनाने के लिए भित्ति चित्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी। जब हम किसी मंदिर, गुफा या पौराणिक स्थल के दर्शन को जाते हैं तो मंदिर की दीवारों, गुंबद व अंदरूनी हिस्सों में बने देवी देवताओं के भित्ति चित्र देखने के बाद उनसे संबंधित पूरी घटना मन में अंकित हो जाती है।

विडंबना है कि पौराणिक मंदिरों के नवीनीकरण के नाम पर इन भित्ति चित्रों को नष्ट किया जा रहा है। जो बचे हैं वह भी नष्ट होने के कगार पर है। इन भित्ति चित्रों को बचाकर मंदिरों, गुफाओं और पुरातन स्थलों के आकर्षण को बचाया जा सकता है, जोकि निसंदेह पर्यटकों के भी आकर्षण का केंद्र होंगे। ओरछा, दतिया, मथुरा, ब्रज एवं अजंता ऐतिहासिकसास्कृतिक , और धार्मिक रूप से समृद्ध है। यहां के भित्ति चित्रों को भी संरक्षित कर उनको पर्यटन के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसी वजह से प्रस्तुत अध्ययन का महत्व है।

कुंजीभूत शब्द -

भित्तिचित्र, कलात्मक रूपांकन, वर्णक, ललितकला, टेंपरा रंग, टेरावर्ट, लेपिस लाजूली, फ्रेंस्को एवं टेम्परा तकनीक, शंखचूर्ण, उकेरना, ओपना।

परिचय –

भित्ति कला सबसे प्राचीन चित्रकला है। प्रागैतिहासिक काल के ऐतिहासिक अभिलेखों में सर्वप्रथम मिट्टी के बर्तनों का निर्माण हुआ, लेकिन कुछ समय बाद लोग मिट्टी का उपयोग

दीवारों पर चित्र बनाने के लिए करने लगे। भित्तिचित्र कला में, दीवारों पर ज्यामितीय आकृतियों, कलात्मक रूपांकनों, पारंपरिक डिजाइनों, सहज बनावट और अनुकरणीय सरल आकृतियों में मुक्त कल्पना, मुक्त आवेग और रैखिक ऊर्जा निहित होती है, जो अद्वितीय ताजगी और दृश्य सौंदर्य पैदा करती है।

शब्द "भित्तिचित्र" का उपयोग कला के इतिहास में किसी सतह पर खरोंच या पेंटिंग करके लिखने या डिजाइन करने के द्वारा निर्मित कला के कार्यों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। जिसमें वर्णक की एक परत को खरोंच कर उसके नीचे दूसरी परत प्रकट करना शामिल है। इस तकनीक का उपयोग मुख्य रूप से कुम्हारों द्वारा किया जाता था, जो अपने माल को चमकाते थे और फिर उसमें एक डिज़ाइन को खंगालते थे। प्राचीन समय में, दीवारों पर एक नुकीली वस्तु से भित्ति चित्र बनाए जाते थे, हालाँकि कभी-कभी चाक या कोयले का उपयोग किया जाता था। भित्तिचित्र सरल लिखित शब्दों से लेकर विस्तृत दीवार चित्रों तक हैं, और वे प्राचीन काल से अस्तित्व में हैं, उदाहरण के लिए प्राचीन मिस्र, प्राचीन ग्रीस और रोमन साम्राज्य के समय के उदाहरण हैं। यह शब्द ग्रीक - ग्राफीन से लिया गया है - जिसका अर्थ है "लिखना"।

ओरछा, दतिया, मथुरा, ब्रज एवं अजंता के भित्ति चित्रों की निर्माण कला को केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं माना जा सकता, यह प्रगतिशील और जीवंत कला का आदर्श प्रस्तुत करती है। ओरछा, दतिया, मथुरा, ब्रज एवं अजंता को मंदिरों एवं गुफाओं का शहर ही कहा जा सकता है। यहाँ के अनेक मंदिरों एवं गुफाओं की दीवारों और छतों पर रासलीलाओं के विभिन्न दृश्य न केवल आकर्षक हैं, बल्कि दिव्य वातावरण बनाने में समर्थ, सफल और सहायक भी हैं।

प्राचीन काल से मनुष्य अपनी आंतरिक अनुभूति भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को अभिव्यक्त और संप्रेषित करने के लिए अनेक प्रकार के माध्यमों का उपयोग करता रहा है। स्वयं की अभिव्यक्ति कला के मौलिक रूप में हमारे सामने प्रत्यक्ष एवं अनेक विधाओं के रूप में दिखाई देती है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में शिक्षा में ललित कला को महत्वपूर्ण भाग के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। शास्त्रीय ज्ञान के साथ ललित कला, चित्रकला, संगीत, नाट्य, नृत्य आदि का प्रचलन हर काल में भारतीय संस्कृति में निरंतर चलता आ रहा है। यह मानव को मंत्रवत जीवन एवं तनाव से दूर रखते हुए उसे सुख शांति संतोष व संवेदना

प्रदान कर उसमें नई ऊर्जा का संचार करती है। मानव जिस सामाजिक परिवेश में रहता है, जिस परिस्थिति में जीता है और जैसा सोचता है उसी को वह तूलिका व रंगो तथा कला के अन्य माध्यमों में समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। इन्ही अवधारणाओं को सफलतम रूप में व्यक्त करने कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को उत्पन्न करने हेतु ललित कला पर अनादिकाल से बल दिया जाता रहा है। कई राजा महाराजाओं ने अपने दरबार के रत्नों में कलाकारों को भी स्थान दिया है और स्वयं तथा कला के माध्यम से अपने कला विचारों को प्रचारित किया है।

भित्ति चित्रण विधि -

ओरछा, दतिया, मथुरा, ब्रज एवं अजंता के चित्रों का धरातल तैयार करने के लिए सर्वप्रथम प्लास्टर की परत में खड़िया, चुना, गोबर का बारीक गारा गुफा की खुदरी दीवार पर लगा दिया जाता था। इस गारे को कई दिन तक अलसी के पानी में भिगोकर फूलने के लिए रख दिया जाता था। कभी-कभी छत में लगाने वाले गारे में धान की भूसी मिलाने का भी प्रचलन था। प्लास्टर की पहली तह पौन इंच से लेकर एक इंच तक मोटी होती थी। जिसकी ऊपर अंडे के छिलके की मोटाई के बराबर सफेद प्लास्टर का लेप चढ़ा दिया जाता था। इस प्रकार प्रत्येक स्थान को प्लास्टर से ओपा जाता था। फिर उसके ऊपर चित्रण होता था। इससे दीवारों के छिद्र भर जाते थे। और दीवार चित्रण के लिए समतल हो जाती थी। ई.वी.हेविल का मत है कि ''अजंता में चित्र पूर्ण हो जाने पर जब सुख जाते थे, तो चित्र में अत्यधिक प्रकाश को उभारने के लिए टेंपरा रंग से चित्रण किया जाता था (सफेद मिश्रित गाढ़ा रंग)''। लेडी हैरिंघम के मतानुसार - ''सफेद प्लास्टर पर पूर्ण विवरण सहित लाल रेखाकंन करने के पश्चात् एक दो पतले गंदे रंग टेरावर्ट (गंदा शब्ज रंग) खनिज रंग से कहीं-कहीं लाल रंग झलकता छोड़कर रंगों की अन्य ताने लगा दी जाती थी और फिर स्थानीय रंग लगाए जाते थे। बाद में काले तथा भूरे रंग से निश्चित सीमा रेखाएं बना दी जाती थी। अंत में आवश्यकता के अनुसार छाया का प्रयोग भी किया जाता था। गोलाई दर्शाने के लिए विरोधी रंग या काले रंगों के प्रयाग द्वारा आकृति को निश्चित रूप प्रदान किया जाता था परंतु ग्रिफिथ्स महोदय ने चित्र के रेखांकन में केवल लाल रंग के प्रयोग के द्वारा रेखांकन करने की पद्धति का वर्णन किया है।

भित्ति चित्रों में रंग -

ओरछा, दतिया, मथुरा, ब्रज एवं अजंता के भित्ति चित्रों में खनिज रंगों का ही प्रयोग हुआ है। जिससे वे चूने के क्षारात्मक प्रभाव से अपना अस्तित्व खो ना बैठे। रंगों में सफेद, लाल, पीला और विभिन्न भूरे रंगों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त नीला (लेपिस लाजूली) और गंदे हरे (संग सब्ज टेरावर्ट) रंग है। सफेद रंग अपारदर्शी है और चूने या खडिया से बनाया गया है। लाल तथा भूरे खनिज रंग है। हरा रंग एक स्थानीय पत्थर से बनाया गया है। लेपिस लाजूली रंग फाइस आयात किया जाता था, शेष रंग स्थानीय थे। भित्तिचित्रों की चित्रण विधि में फ्रेंस्को तथा टेंपरा तकनीक अपनाई गई है। फ्रेंस्को तकनीक में दीवारों पर गीले प्लास्टर में चित्र उकेरे जाते हैं। प्लास्टर के सूखने पर चित्र दीवार पर स्थापित हो जाते हैं और चित्रों के रंग उभर कर आते। टेंम्परा तकनीक में प्लास्टर सूखने पर चित्र बनाए जाते हैं और रंगों में अंडे की सफेदी और चूना मिलाते हैं। चित्र बनाने के लिए पहले दीवारों को ठीक से रगड़ कर साफ़ करते थे। फिर शंखचूर्ण, पत्थरों का चूर्ण, गोबर, सफेद मिट्टी, चौक इत्यादि को फेंटकर बनाए हुए गाढे लेप को दीवार पर चढ़ाया जाता था। लाल खड़िया का उपयोग करके चित्र का खाका बनाया जाता था। भित्तिचित्रों में लाल रंग का अधिक एवं नीले रंग का प्रयोग कम मात्रा में किया गया है।

उपसंहार -

चित्रित ग्रन्थों में कलाकारों ने लोक तत्वों को महत्व देकर उन्हें जनता के निकट पहुँचाया है। अहिरावण चित्रावली, अष्टयम चित्र, गीतगोविंद, भागवतपुराण, रागमाला आदि के चित्र इस शैली के अद्भुत उदाहरण हैं। वे परंपरा को विकसित करने और आगे बढ़ाने में बहुत मददगार रहे हैं। जिस प्रकार अजन्ता से राजपूत शैली का विकास हुआ, उसी प्रकार बुन्देली शैली का विकास राजपूत शैली से हुआ, परन्तु मुगल कलम का प्रभाव दोनों पर पड़ा है, तथापि बुन्देली कलम की अपनी कुछ विशेषताएँ हैं, जिसके कारण इसे राजपूत कलम से भिन्न मानी जाती है। बुंदेली कलम भारतीय चित्रकला शैली को एक विशेष स्पर्श देते हैं।

भारतीय कला के इतिहास में सभी कलाकारों के लिए इसका विशेष स्थान माना जाता है। एक प्रमुख विधा के रूप में इसके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इसलिए इस शैली का बहुत महत्व है। लेकिन अभी भी इस शैली की कुछ सामग्री प्रसिद्ध और प्रमुख लोगों के निजी

संग्रह में है, जिसे वे अपनी संपत्ति समझकर शोधकर्ताओं और पारखी लोगों को पूरे उत्साह के साथ नहीं दिखाते, लेकिन यह उम्मीद की जाती है कि जिस दिन यह सामग्री निकलेगी, उस दिन बुंदेलखंड शैली के और तत्व सामने आएंगे और इसलिए यहां के लोग इस उम्मीद पर कायम हैं कि भविष्य में भी बुंदेलखंड का गौरव इसी तरह रौशनी की ओर बढ़ता रहेगा, जिससे यह भारत की प्रमुख शैलियों में गिने जाते हैं और जिनका निर्णय भविष्य में ही तय होगा।

आज भी कलाकार दिन-प्रतिदिन की खोजों और प्रकाशित सामग्री के माध्यम से इसके अस्तित्व को महत्वपूर्ण मानते हैं। भारतीय चित्रकला के इतिहास में चित्रकला शैली को प्रमुख स्थान देकर इसके योगदान और महत्व को भुलाया नहीं जा सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. राधा कमल मुखर्जी - भारतीय चित्रकला का विकास
2. विन्ध्य प्रदेश ओरछा का अतीत - सूचना व प्रसार विभाग-उ.प्र.
3. नाथ डॉ. राम - मध्यकालीन भारतीय कलायें एवं उनका विकास
4. मिश्र राम चरण हयारण्य - बुन्देलखण्ड की संस्कृति और साहित्य
5. दास राय कृष्ण - भारत की चित्रकला
6. दिव्य अम्बिका प्रसाद - ओरछा की चित्रकारी
7. गैर ठाकुर लक्ष्मण सिंह - ओरछा दर्शन का इतिहास
8. चतुर्वेदी राममित्र - ओरछा का अतीत
9. अग्निहोत्री - विन्ध्य प्रदेश का इतिहास
10. मुकुल डे - माई पिलेग्रिमेज टू अजन्ता एण्ड वाघ, 1950
11. जे. वरगीज - बौद्ध राव टैम्पिल्स आव अजन्ता, 1950
12. आर.एस. गुप्ता - अजन्ता, एलौरा एण्ड औरंगाबाद केवज, 1962
13. ए. घोष - अजन्ता क्यूरल्स, 1967
14. डॉ. डी.एन. वर्मा - अजन्ता की गुफायें
15. वाचस्पति गैरोला - भारतीय संस्कृति और कला, इलाहाबाद, 1973

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR